नोबल पुरस्कार से सम्मानित कविंद्र रवीन्द्रनाथ टैगोर की अमरकृति

गीतांजलि (अंश)

दो शब्द-

कविंद्र रवीन्द्रनाथ टैगोर एक ऐसे अनमोल रत्न थे, जिसे सृष्टि ने भारत मां की गोद में देकर उसे धन्य किया और किया प्रत्येक भारतीय को गौरवान्वित। इस रत्नश्रेष्ठा ने अपने काव्य-प्रकाश से पूरे विश्व को आलोकित कर दिया। 'गीतांजलि' के रूप में उनके द्वारा दिये प्रकाश से आज भी विश्व साहित्य जगमगा रहा है। यूं तो रवीन्द्रनाथजी ने अपनी लेखानी का जादू हर विधा पर बिखेरा है, किंतु 'गीतांजलि' उनकी अमर कृति है।

गीतांजलि

1-

अपनी चरण धूलि के तल में
मेरा शीष झुका दो
देव! डुबा दो मम अहंकार
मेरे अश्रुजल में।
अपने को गौरव देने को
अपमानित करता अपने को
अपने आप में घूम-घूम कर
मरता हूं क्षण-क्षण मैं।
देव! डुबा दो मम अहंकार
मेरे अश्रुजल में।

देव! अपने कार्यों का
आत्म प्रचार न करूं
तुम यह इच्छा
मेरे जीवन में पूर्ण करो।
मुझको अपनी चरम शांति दो
प्राणों में परम कांति हो
आप खड़े होकर मुझे दें ओट
अपने हृदय कमल में।
देव! डुबा दो मम अहंकार
मेरे अश्रुजल में।

2-

मेरे मन में जो अनगिनत वासनाएं भरी हैं
उन सबसे वंचित करके

तुमने बचा लिया।
संचित रहे यह करुणा
इस कठोर जीवन में।

बिन मांगे जो मुझे दिया है
ज्योति, गगन, तन-मन, प्राण दिया है।
दिन-दिन मुझे बना रहे तुम
उस महादान के योग्य।
अति वासना के संकट से
मुझे उबार कर।

कभी भूलता, कभी चलता
किंतु, तुम्हें लक्ष्य बनाकर
उसी राह पर
निष्ठुर! सामने से हट जाते हो पर
है मालूम यह दया है तुम्हारी
अपनाने को ठुकराते तुम
पूर्णतर बना इस जीवन को
अपने मिलन योग्य कर लोगे।
आधी-इच्छा के इस संकट से
मुझे उबार लोगे।

3-

अनजानों को जानकर
राह कितने घरों को दी
किया दूर को निकट
बंधु कहा भाई परायों को
निवास छोड़ना पुराना जब-जब जाता मैं
जाने क्या हो तब, मन यही सोच घबराता,
नित नूतन बीच तुम तो पुरातन
यह सत्य मैं बिसरा जाता।

किया दूर को निकट
बंधु कहा भाई परायों को।

जीवन और मरण मे, अखिल भुवन में
जहां कहीं भी अपना लोगे
जनम-जनम के जाने-अनजाने,
तुम्हीं सबसे मुझे परिचित करा दोगे।
तुम्हें जान लूं तो न रहे कोई पराया
न कोई मनाही, न कोई डर
सारे रूपों में तुम हो जागे
सदा दरस तुम्हारा प्रभु हो।
किया दूर को निकट,
बंधु कहा भाई परायों को।

4-

विपदाओं से मुझे बचाना
यह प्रार्थना नहीं मेरी।
प्रार्थना है-
विपदाओं में न होऊं भयभीत
न ही दुखों में चित्त व्यथित हो
भले ही न दो सांत्वना।
दुखों पर पाऊं विजय मैं।
संबल भले ही न जुटे
पर,
बल ना मेरा फिर भी टूटे।
क्षति जो हो घटित
जगत देता केवल वंचना
अपने मन में न मानूं कोई क्षय।

मुझे संकटों से बाहर निकालो
यह प्रार्थना नहीं मेरी

उनका कर सकूं सामना
इतना अवश्य दो बल।
मेरा भार घटाकर तुम
भले ही न भी दो सांत्वना
ढो पाऊं वह भार इतना हो निश्चय।
शीश झुकाए जब आए सुख
तो पहचान लूं मैं तुम्हारा मुख
दुख की रात में डूबी हो निखिल धरा
मैं करूं न तुम पर किसी प्रकार का संशय
बस यही है मेरी तुमसे प्रार्थना।

5-

हे अंतरयामी! मम अंतर विकसित करो
उज्जवल करो, निर्मल करो
कर दो सुंदर हे!
उद्दत करो जागृत करो,
कर दो निर्भय हे!
मंगल करो, निरापद करो, नि:संशय कर दो हे!
हे अंतरयामी! मम अंतर विकसित करो

सबसे युक्त करो मुझको हे
मुक्त करो सब बंधन से।
संचार करो सारे कर्मों में
शांतिमय सब छंद।
चरण-कमल में मेरा चित्त निष्पंदित कर दो हे!
नंदित करो, प्रभु नंदित करो, नंदित कर दो हे!
मम अंतर विकसित करो
हे अंतरयामी!

6-

प्रेम-प्राण से, गंध-गान से, आलोक-पुलक से

निखिल गगन तल-भूमंडल को प्लावित करके
झर रहा हर क्षण तुम्हारा अमल अमृत-निर्झर।

चारों दिशाओं की सारी बाधएं आज तोड़कर
जाग रहा आनंद अनोखा मूर्त रूप-धर,
निविड़ सुधा से जीवन हृदय उठा है भर।

चेतना मेरी उस कल्याण रस के मधुर स्पर्श से
शतदल कमल सी खिली परम हर्ष से।
उसका सब मधु तम्हारे चरण धर कर।
नीरव ज्योति-जगी हृदय प्रांतर में
मुक्त ऊषा के उदय की आभा निर्मल
हटा नयन का अलस आवरण।

7-

तुम आओ प्राणों में नव-नव रूपों में
आओ तुम गंध-वर्ण में, आओं तुम गीतों में।
आओ तुम पुलकित अंगों में सरस रस भर
आओ तुम मुग्ध मुदित नयनों में।
तुम आओ प्राणों में नव-नव रूपों में।

आओ हे कांतविमल, उज्जवल-तर आओ।
आओ स्निग्ध प्रशांत सुंदरतर आओ।
आओ विधान के बहुरंगी रूपों में।
आओ दुख में, सुख में, आओ निरंतर अंतरतर में।
आओ दैनंदिन सकल कर्मों में।
आओ तुम सब कर्मों के अवसानों में।
तुम आओ प्राणों में नव-नव रूपों में।

8-

धान के खेतों में आज धूप-छांव

कर रही लुका-छिपी का कौतुक
किसने छोड़ी नील गगन में
श्यामल मेघ की नौका।
आज भौंरा भूल रहा मधुरस पीना
उड़ फिर रहा वह प्रकाश में डूबा,
यह कैसा मेला नदी तीर पर
चकवा-चकवी का।

आज नहीं घर मैं जाऊंगा भाई
आज न जाऊंगा घर।
उघाड़कर अंबर लूट लूंगा
आज मैं सारी बहार।
ज्वार का वो फेनिल जल
उड़ता फिर रहा मरुत लहर पर खिलखिल
आज अकारण बजाकर बंसी
बीतेगा यह सारा दिन।
आज नहीं घर मैं जाऊंगा भाई
धान के खेतों में आज धूप-छांव
कर रही लुका-छिपी का कौतुक।

9-

आनंद के सागर से
आया है ज्वार लिए तूफान।
डांड पकड़ लो बैठकर सब
खेता चल अम्लान।
जो भी है सब बोझ उठाए
दुख की नैया पार लगाए
चला चल तरंगों पर
भले चले जाएं प्राण।
आनंद के सागर से
आया है ज्वार लिए तूफान।

कौन रोकता है पीछे से
मना करे है कौन।
डर की बात करे कौन आज
डर का हमें है ज्ञान
कौन पाप ग्रह दशा कौन जो
सुख के किनारे रहूं मैं बैठा
पकड़ ले जोर से पाल की डोरी
गाते, सुख से कर प्रयाण
आनंद के सागर से
आया है ज्वार लिए तूफान।

10-

तुम्हारे पूजा के थाल में
सजाऊंगा आज दुख के अश्रुधार।
जननी, बनाऊंगा ग्रीवा की
मंजुला-मंजुल मोती माल।
रवि-शशि लिपटे हैं आज
हार बने चरणों में।
मेरे दुख से शोभित होगा
तेरा वक्ष विशाल।

यह तुम्हारा सब धन-धान्य
तुम बोलो क्या करूं इसका
देना चाहो तो दो मुझको
लेना चाहो तो ले लो।
दुख है मेरे ही घर का धन है
तुम पहचानो खरे-रतन को।
तुम्हारे प्रसाद से उसे खरीदूं
यह मेरा अहंकार।

तुम्हारे पूजा के थाल में
सजाऊंगा आज दुख के अश्रुधार।

11-

बांधा हमने कास-गुच्छ और गूंथी शेफाली माला।
नए धान की मंजरियों से
भर लाया हूं अपना डाला।
हे शारदे! अपने
श्वेत मेघ के रथ पर आओ
आओ निर्मल नील गगन के पथ से
आओ धुले सुश्यामल ज्योति से झलमल
वन पर्वत कानन स।
माथे शतदल का मुकुट
शिशिर ज़डित मणिमाला से।
पुष्प मालती के झर झर कर
आसन बने बिछे निर्जन में
गंगा तट पर, कुंजों में,
पदतल पर, हंसमन तत्पर।

तुम करो गुंजार तार
अपनी स्वर्ण वीणा के
मृदुल मधुर-मधुर झंकार
जाए गल क्षणिक अश्रुधार खिल जाए संसार
पलक ओट से झांकता
झिलमिल करता पारसमणि
करुणामय होकर झुला दो
वही ज्योति निर्मल मन की
बनें स्वर्णिम सभी संभावनाएं
हो जाए उजियारा अंधकार में भी।

12-

लगी चमाचम धुले पाल में
मंद मीठी बयार।
देखी नहीं कभी भी ऐसी
सधी हुई डांड पतवार।

लाता कौन समंदर पारे
वह सुदूर का धन रे!
चाहता लुट जाना मन रे।
चाहता फेंक जाना इसी किनारे
नई चाहनाओं को।

रिमझिम-रिमझिम झरता जल पीछे
गुरु-गुरु गरज रहा है घन
छिटक-छिटक पड़ता मेघों से
मुखड़े पर अरुण किरण का कण

ओ खेवनहार, कौन हो तुम,
किसके हास्य-रूदन के संबल।
सोच रहा यह चंचलचित्त,
किस लय में बांधोगे सितार
किस लय में गाओगे कौन सा मंत्र।

13-

मेरे नयन हो गए मुग्धमय
मैंने यह क्या देखा जी भर।
हरसिंगार के आसपास में
गिरे फूलों के हास-वास में
ओस नहाई घास-घास में रक्तरंजित पग धर-धर
मेरे नयन हो गए मुग्धमय
मैंने यह क्या देखा जी भर।

आंचल धूप-छांव का
लुट-लुट जाता है वन-वन में।
फूल उसकी ओर देखकर
जाने क्या कहते हैं मन-मन में।
आओ, तुम्हें हम करेंगे वरण,
मुंह का परदा करो हरण,
बादल का छोटा सा टुकड़ा
दोनों हाथों से दूर हटाकर
मेरे नयन हो गए मुग्धमय
मैंने यह क्या देखा जी भर।

वन देवी के द्वार-द्वार पर
बज रही है गहरी शंख ध्वनि,
नभ-वीणा के तार-तार पर
उठ रहा स्वागत गीत।
मेरे ही उर में शायद कहीं बजते स्वर्ण नुपुर
सभी भाव, सभी कर्मों में शिला निचोड़ी रस भर
मेरे नयन हो गए मुग्धमय
मैंने यह क्या देखा जी भर।

14-

हे जननी, तेरे करुण चरण कल्याणी।
मैंने देखे प्रभात किरण में।
जननी, तेरी मनहर मंजुल वाणी,
भर गई चुपचाप मौन संपूर्ण गगन में।

अखिल भुवन में तुझे शीश नवाऊं
सब कर्मों में तुझे प्रणाम करूं
आत तन-मन-धन सब करूं निछावर
भक्ति-भाव से तेरी पावन पूजा-अर्चन में।

हे जननी, तेरे करुण चरण कल्याणी।
मैंने देखे प्रभात किरण में।

15-

उन्मुक्त उदार अखिल भुवन में
गूंज रहा आनंद का गीत,
वो गीत न जाने कब गहरा होकर
गूंजेगा मेरे हृदय में।

जल-नभ ज्योति मधुर बयार सब
इनको प्यार करूंगा मैं कब,
ये कब अंतर में आकर
बैठेंगे विभिन्न रूप धर।

नयन बिछाते ही कब होंगे
प्राण पुलक से प्रमुदित
जिस पथ से मैं चला जाऊंगा
सबको देकर तुष्टि।
तुम हो सत्य, यही सत्य
कब किस क्षण में
सहज हो उठेगा जीवन में?
कब मुखर हो उठोगे तुम
संपूर्ण मेरे सर्वस्व पर
इसीलिए शायद उन्मुक्त उदार अखिल भवन में
गूंज रहा आनंद का गीत।